इकाई 26 कला तथा वास्तुकला

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- ई.पू. 200 से सन् ई. 300 के बीच की कला संबंधी गतिविधियों और वास्तुकला से संबंधित कार्यकलापों के बारे में जान सकेंगे,
- वास्तुकला और मूर्तिकला में अपनायी जाने वाली तकनीकों और तरीकों को रेखांकित कर सकेंगे,
- गांधार, मथुरा और अमरावती कला केंद्रों की प्रमुख विशेषताओं और स्वरूपों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे, और
- इस काल की कला तथा वास्तुकला पर धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव पर प्रकाश डाल सकेंगे।

26.1 प्रस्तावना

इकाई 3, 10 और 11 में हमने पढ़ा है कि किस प्रकार विभिन्न कला-रूपों का जन्म और विकास हुआ और किस प्रकार इनमें तत्कालीन संस्कृति प्रतिबिंबित हुई है। ऐसी कलाकृतियों की संख्या काफी है, जिसमें आम आदमी की प्रतिदिन की जिंदगी प्रतिबिंबित हुई है, ये कलाकृतियाँ समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। ये कलाकृतियाँ शिला चित्र, मिट्टी की मूर्तियों और खिलौनों के रूप में उपलब्ध है। धीरे-धीरे विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाने वाली कलाकृतियाँ एक खास उद्देश्य के तहत बनायी जाने लगीं। मौर्यकाल में राज्य-संरक्षण में कई प्रकार की कलाओं को प्रोत्साहित किया गया। ऐसे नये सामाजिक वर्गों के उदय से, जो कला को संरक्षण दे सकते थे, कला संबंधी गतिविधियों में नये तत्वों का समावेश हुआ। मौर्योत्तर काल में विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा कला को संरक्षण दिए जाने के कारण इसका विस्तार भारत और उसके बाहर भी हुआ, अब यह केवल राज्य के अधीनस्थ नहीं रही। मौर्यकाल के पश्चात् एक और परिवर्तन आया : पत्थर जैसी न टूटने वाली सामग्री को कलात्मक अभिव्यक्ति का आधार बनाया गया। इस काल में भारत से बाहर के कला रूपों और यहाँ के कला-रूपों के बीच आदान प्रदान हुआ। कई कला-केंद्रों का जन्म हुआ। इस इकाई में गांधार और मथुरा कला रूप की प्रमुख विशेषताओं पर विचार करेंगे। इस संदर्भ में सारनाथ और अमरावती की भी चर्चा की जाएगी। अधिकांश कला-रूप बौद्ध और जैन धर्म से प्रभावित हैं, कुछ ब्राह्मण धर्म का प्रभाव ग्रहण किए हुए हैं। इसके अतिरिक्त इस इकाई में विभिन्न स्तूपों, विहारों और गुफाओं आदि की वास्तुकला और मूर्तिकला संबंधी विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

26.2 पृष्ठभूमि

मौर्यकाल में वास्तुकला और मूर्तिकला विकसित अवस्था तक पहुँच गयी थी। अशोक के स्तंभ, उन पर जानवरों की आकृतियाँ और खुदाई का काम, परिपक्व कला रूप का प्रमाण है। मौर्य काल की एक विशेषता यह थी कि इसमें पत्थर पर पालिश करके उसे चिकना बनाया जाता था, पत्थर की सतह पर इस प्रकार की शीशे जैसी चमक दूसरे किसी काल में देखने को नहीं मिलती। जानवर आकृतियों के अलावा दीदार गंज, पटना से यक्षिणी की मूर्ति मिली है, जो कला का सुंदर और उत्कृष्ट नमूना है। इस शानदार कलाकृति से उस समय की औरतों के बाल संवारने के ढंग, आभूषण और वस्त्रों का पता चलता है। खुदाइयों से मौर्यकालीन बहुत सी मिट्टी की मूर्तियाँ मिली हैं। यह इस बात का संकेत है कि कला कृतियों का निर्माण राजकीय घराने तक ही सीमित नहीं था, बल्कि जनता तक उनकी पहुँच थी। इसी कारण जब राजकीय कला का ह्रास हुआ और नये कलारूप सामने आये तब भी मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण होता रहा।

जहाँ तक वास्तुकला का संबंध है, हम मेगस्थनीज के वर्णन से चंद्रगुप्त के लकड़ी के महल की सूचना पाते हैं। पाटलिपुत्र में हुई खुदाई से लकड़ी की दीवारें और खंभे मिले हैं। बौद्ध ग्रंथों और फाहयान हवैन सांग के वर्णन से यह पता चलता है कि मौर्यकाल में स्तूपों का भी निर्माण हुआ था। यह हो सकता है कि सांची, सारनाथ, तक्षशिला और भारहूत जैसे धार्मिक केंद्रों में स्तूपों का निर्माण कार्य मौर्यकाल में ही शुरू हुआ हो और बाद के वर्षों में उनका विस्तार किया गया हो।

ई.पू. 200 से सन् ई. 300 के बीच की कला की निम्नलिखित विशेषताएँ थी :

1) कला संबंधी गतिविधियों का संबंध धर्म से था और कलाकृतियों में धर्म परिलक्षित होता था।
2) इस काल में बुद्ध की मूर्ति बनायी जाने लगी, इसके पहले बोधि वृक्ष स्तूप, चरण-चिह्न आदि के रूप में ही उनकी पूजा की जाती थी। अन्य धर्मों में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन तेजी से बढ़ा।
3) स्तूपों, चैत्यों और विहारों के निर्माण को लोकप्रियता मिली।
4) कलाकृतियों में, किसी एक ही धर्म का प्रतिबिंबन नहीं होता था। उदाहरण के लिए भरहूत और सांची स्तूपों में केवल बुद्ध के जीवन की झांकी ही नहीं अंकित है, बल्कि यक्ष, यक्षिणी, नाग और अन्य लोक प्रिय देवताओं के चित्र भी अंकित हैं।
5) इसी प्रकार, स्तूपों को सजाने के लिए प्राकृतिक दृश्य भी अंकित किए जाते थे। वस्तुतः यह "सेक्यूलर" कला रूप का उदाहरण है।
6) दूसरी संस्कृतियों से आदान-प्रदान के कारण इस काल की कलाकृतियों में गैर भारतीय कला की छाप भी मिलती है। खास तौर पर यह बात गांधार कला के लिए सटीक है, जिसके अंतर्गत एक क्षेत्र विशेष की कला सामने आई और इसने कई विभिन्न तत्वों को आत्मसात किया।

आइए, विस्तार से इस काल की कला और वास्तुकला के विभिन्न पक्षों पर विचार करें।

26.3 वास्तुकला

इस काल की वास्तुकला को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :

i) रिहायशी मकान/आवासीय संरचना
ii) धार्मिक स्मारक

रिहायशी मकान के अवशेष काफी कम मात्रा में पाये जाते हैं, क्योंकि आरंभिक दौर में उनका निर्माण लकड़ी जैसी नष्ट होने वाली सामग्री से होता था। खुदाई के दौरान दूसरी श्रेणी के कई स्मारकों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

26.3.1 रिहायशी वास्तुकला

खंड 4, इकाई 15 में हमने साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर नगरीय जीवन के बारे में विचार विमर्श किया है। इस काल के बारे में भी हमें इसी प्रकार की सूचनाएँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए मिलिन्द पण्ह में खंदक, चहारदीवारी, प्रवेश द्वार, बुर्ज, सुनियोजित गलियों,

बाजारों, बागों और मंदिरों से युक्त एक नगर का उल्लेख मिला है। ऐसी बहुमंजिली इमारतों का भी जिक्र किया गया है, जिसमें रेलिंग से घिरी खुली छत और बरामदे बने हुए थे, ये ज्यादातर लकड़ी के बने थे। इन वर्णनों की एक हद तक पुरातात्विक स्रोतों से पुष्टि कर ली गयी है। देहातों में वास्तुकला के तरीकों या झोपड़ियों के आकार-प्रकार में कोई विशेष बदलाव आने की सूचना नहीं मिलती है।

26.3.2 मंदिर और बुर्ज

उत्खनन से इस काल के मंदिर की संरचना का अपर्याप्त ब्यौरा ही प्राप्त हुआ है। इस काल के आरंभिक मंदिर निम्नलिखित हैं :

- झंडियाल (तक्षशिला) का मंदिर
- नागरी (राजस्थान) का शंकरशान मंदिर
- बेसनगर (मध्यप्रदेश) का भगवती मंदिर
- नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश) का बहुकोणीय शिखर वाला मंदिर

फाहयान ने अपने वृतांत में पुरुषपुर (पेशावर) के बुर्ज का उल्लेख किया है। यह तेरह मंजिली भव्य इमारत थी, जिसमें लोहे का खंभा लगा था, इस खंभ से एक छतरी जुड़ी हुई थी। यह बुर्ज कनिष्क-1 को समर्पित था।

वस्तुत: मंदिरों का निर्माण और पूजा के लिए देवताओं की स्थापना जैसी गतिविधियाँ बाद के वर्षों में आरंभ हुई। इस काल में बौद्ध स्तूप और अन्य धार्मिक इमारतें ही ज्यादा बनायी गयीं।

2. झंडियाल मन्दिर

26.3.3 स्तूप

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अवशेषों को मिट्टी में दबाकर सुरक्षित रखने की प्रथा बहुत पुराने समय से चली आ रही थी। बौद्ध कला ने इस प्रथा को अपनाया और इस प्रकार के पुनीत स्थलों के ऊपर बनी इमारतों को स्तूप कहा गया। बौद्ध स्रोतों के अनुसार बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में बांट कर विभिन्न स्तूपों का निर्माण किया गया। अशोक के शासनकाल में इन स्थलों की फिर से खुदाई हुई और बुद्ध के अवशेषों को फिर से कई भागों में बांटा गया और इस प्रकार कई नये स्तूप सामने आये। स्तूप में पूजा-अर्चना आरंभ हुई, उसका अलंकरण बढ़ा और उनके निर्माण के लिए एक खास तरह की वास्तुकला विकसित हुई।

स्तूपों का आकार कटोरे या अर्द्ध वृत्ताकार गुंबद जैसा होता था। ऊपरी हिस्सा समतल होता था। जिसे हर्मिक या ईश्वर का आवास स्थल माना जाता था। यहीं पर बुद्ध या किसी अन्य धार्मिक व्यक्तित्व के अवशेष सोने या चांदी के डिब्बे में रखे जाते थे। मध्य में एक लकड़ी का खंभा (यशती) लगा होता था जिसका निचला हिस्सा स्तूप के ऊपरी हिस्से से जुड़ा होता था। इस खंभे के ऊपर तीन छतरियां लगी होती थी जो सम्मान, श्रद्धा और उदारता का प्रतीक मानी जाती थीं।

i) बोध गया (बिहार)

गया से पंद्रह किलोमीटर दूर बोध गया में बुद्ध ने बोधिसत्व की प्राप्ति की थी और यहीं अशोक ने बोधि मंड का निर्माण करवाया था। पर आज इस संरचना का कोई अवशेष उपलब्ध नहीं है। केवल शुंग काल में बने कुछ पत्थरों के खंभे प्राप्त हुए हैं। उनकी स्थापत्यगत संरचना स्तूपों के पास बने खंभों से मिलती जुलती है। उनमें जातक कथाएँ चित्रित हैं।

ii) **सांची का स्तूप (मध्य प्रदेश)**
सांची विदिशा (भिल्सा) से 14 किलोमीटर दूर है और यहां का स्तूप शायद भारत का सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें तीन स्तूप बने हैं, तीनों स्तूपों के लिए अलग-अलग प्रवेश द्वार है। पर इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण वह महीन स्तूप है, जिसका निर्माण अशोक के शासनकाल (250 ई.पू.) में हुआ था। 150 ई.पू. में शुंग शासन काल में इसका आकार दुगना कर दिया गया। अशोक काल की ईंटों को हटाकर पत्थर लगाया गया और इसके चारों ओर "वेदिका" का निर्माण किया गया। इसकी सुंदरता बढ़ाने के लिए, प्रत्येक दिशा में एक प्रवेश द्वार बनाया गया। दक्षिण द्वार पर स्तंभ स्थापत्यकार का एक वक्तव्य प्राप्त हुआ है, जिसके अनुसार यह प्रवेश द्वार राजा शतकर्णी ने धर्मार्थ दान दिया था और इसमें नक्काशी का काम हाथी दांत का काम करने वाले शिल्पकारों द्वारा किया गया था।

उत्तरी द्वार और इसके चौखटों पर जातक कथाएँ अंकित हैं। इसके अतिरिक्त सांची स्तूप में निम्नलिखित चित्र बने हुए हैं

1) बुद्ध के जीवन से संबद्ध चार प्रमुख घटनाएँ–जन्म, बोधिसत्व की प्राप्ति, धर्मचक्र-प्रवर्तन और महापरिनिर्वाण
2) पक्षी और पशुओं जैसे शेर, हाथी, ऊँट, बैल आदि के चित्र काफी मात्रा में उपलब्ध हैं। इनमें कुछ जानवरों पर सवार भारी कोट और बूट पहने चित्रित किए गये हैं।
3) दीवारों पर कमल और अंगूर के गुच्छों के सुंदर चित्रों द्वारा अलंकरण किया गया है।
4) जंगली जानवरों का चित्र इस प्रकार बनाया गया है मानो सारा जंगल बुद्ध का उपासक हो गया हो।

iii) **भारहुत स्तूप**
यह स्तूप सतना (मध्य प्रदेश) से 21 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। मुख्य स्तूप का अब नामोनिशान नहीं है। इस स्तूप के प्रमुख अवशेष अब भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता और अन्य संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं :
- प्रवेश द्वार या तोरण, जो लकड़ी का बना होता था, इसमें पत्थर की नक्काशी की जाती थी।
- प्रवेश द्वार को छूती हुई रेलिंग। इसमें भी नक्काशी के तौर पर पत्थर लगाए जाते थे। भारहुत की पत्थर के रेलिंग की किनारी भारी पत्थर से निर्मित है।
- इन रेलिंगों के अनुलंब भाग पर यक्ष, यक्षिणी और उन अन्य देवताओं को उत्कीर्ण किया गया है, जो बौद्ध धर्म के साथ जुड़े हुए थे। इनमें से कुछ देवताओं का विवरण भी उत्कीर्ण है, जिससे इन्हें पहचानने में आसानी होती है। अन्य स्तूप रेलिंगों की तरह इसमें भी जातक कथाओं और इनमें जुड़े अन्य प्राकृतिक तत्वों को उत्कीर्ण किया गया है।

iv) **अमरावती**
गुंटूर से 46 किलोमीटर दूर स्थित यह स्तूप सफेद संगमरमर से बना है। हालांकि स्तूप अब पूरी तरह नष्ट हो चुका है, पर इसके नक्काशीदार चौखटे मद्रास और ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित है। मूल रूप में यह स्तूप नगर-प्रमुख और जनता के सहयोग से बनाया गया था।

यह सुंदर स्तूप अपनी गोलाई में 42 मीटर और ऊँचाई में लगभग 29 मीटर था। इसमें एक वृत्ताकार प्रार्थना-पत्र था जो 10 मीटर ऊँचा था और पत्थर से बना हुआ था। वेदिका खंभों पर माला पहने देवताओं, बोधि वृक्ष, स्तूप, धर्म-चक्र और भगवान बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं से संबंधित चित्र उत्कीर्ण किए गए थे। स्तूप के प्रवेश द्वार (तोरण) की वेदिका पर चार शेरों को चित्रांकित किया गया है।

स्तंभों के ऊपर कमल को भी उत्कीर्ण किया गया था। अमरावती स्तूप से कई प्रकार की मूर्तियाँ पाई गयी है। आरंभिक चरण में बुद्ध का प्रतिनिधित्व प्रतीकों के माध्यम से होता था, पर प्रथम शताब्दी ई. से इन प्रतीकों के साथ बुद्ध की प्रतिमा भी बनने लगी।

v) **नागार्जुनकोंडा**
नागार्जुनकोंडा का स्तूप उत्तर भारत के स्तूपों से थोड़ा भिन्न है। यहाँ केंद्र में और बाहर की तरफ दो वृत्ताकार दीवारें थीं, ये दीवारें साइकिल की स्पोक जैसी दीवारों से जुड़ी थी और बीच का स्थान मिट्टी, छोटे पत्थर या ईंटों के छोटे टुकड़ों से भरा होता था। इस स्तूप की गोलाई 30 मीटर और ऊँचाई 18 मीटर थी। बाहर की तरफ इसके गुंबद को नक्काशीदार संगमरमर के पत्थरों से अलंकृत किया गया था। गुंबद की अर्ध गोलाकार छत को चूने और गारे के काम से अलंकृत किया गया था।

इस स्तूप के महत्व का कारण इसकी सुंदर रेलिंग है, जिस पर बुद्ध के जीवन से संबंधित कथाएँ वर्णित हैं। इनमें से प्रमुख हैं :

1) पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए देवता बोधिसत्व से प्रार्थना करते हुए
2) सफेद हाथी के रूप में गर्भ में बुद्ध का प्रवेश
3) सागौन के पुष्पित वृक्ष के नीचे बुद्ध का जन्म

vi) तक्षशिला

तक्षशिला और उसके आसपास के इलाकों में हुई खुदाई से कई स्तूप प्राप्त हुए हैं :

- सर जान मार्शल ने तक्षशिला के चीर-तोपे स्तूप का उत्खनन किया है। इस स्तूप में गुंबद का बाहरी हिस्सा पत्थर का बना था और बोधिसत्व के विभिन्न रूपों से अलंकृत था।
- 1908 में हुए उत्खनन से पेशावर के निकट शाह जी की ढेरी में एक स्तूप था। स्तूप का निर्माण कनिष्क ने करवाया था और इसका जिक्र फाहयान ने भी किया है। इनकी वास्तुकला गांधार कला का नमूना है। (गांधार कला पर हम आगे अलग से इस इकाई में विचार करेंगे)
- झंडियल से प्राप्त स्तूप स्कायथियन-पार्थियन शैली में बना हुआ है। इसी के पास एक छोटी चांदी का पात्र मिला था, जिसमें सोना और कुछ हड्डियाँ रखी थीं।

इसी प्रकार, देश के कई हिस्सों में कई स्तूप पाये गये हैं। मसलन, दो स्तूप मथुरा से प्राप्त हुए हैं। वस्तुतः इस काल में स्तूप कला की एक विशेष शैली का विकास हुआ। सबसे बड़ी बात यह है कि विभिन्न धर्मों के स्तूपों में एक प्रकार की समानता है। इससे यह पता चलता है कि शिल्पकारों के बीच कला का आदान-प्रदान होता था और स्तूप निर्माण में वे जगह-जगह की कलाओं का इस्तेमाल करते थे।

26.3.4 गुफा वास्तुकला

बौद्ध और जैन दोनों की पूजा-अर्चना के लिए चैत्यों और विहारों का निर्माण करते थे।

चैत्य एक प्रकार का पूजा कक्ष था, जिसके केंद्र में एक स्तूप होता था। भिक्षुओं के रहने के लिए पहाड़ियाँ काटकर बनायी गयी गुफाओं को विहार कहते थे।

इस काल के अधिकांश चैत्य और विहार पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में बनाये गये थे। मसलन, पश्चिमी भारत में ये भज, कार्ले, कोंडन, नासिक, चिटाल्डो, अजंता और कन्हेरी में स्थित हैं। इसी प्रकार पूर्वी भारत में इस दृष्टि से उदयगिरि (उड़ीसा) उल्लेखनीय है। चैत्य की सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- इसमें एक लंबा आयताकार कक्ष होता है, जिसका अंतिम छोर अर्द्ध वृत्ताकार होता है।
- यह कक्ष अंदर से मध्य भाग, एक बहुकोणीय शिखर और दो तरफा गलियारों में विभक्त होता है।
- गलियारे और झरोखे के बीच स्तंभों की दो कतारें होती हैं।
- उपासना स्तूप के चारों ओर स्तंभ होते थे और यह मध्य भाग के झरोखे जैसे भाग के केंद्र में स्थित होता था।
- कक्ष की छत गोलाकार-गुम्बजदार होती है।
- प्रवेश द्वार प्रायः उपासना स्तूप की सीध में होता है।
- इसके अग्रभाग में घोड़े की नाल के आकार की एक खिड़की होती है, जिसे चैत्य खिड़की कहते हैं।

गुफा वास्तुकला का दूसरा नमूना विहार या मठ है, जिसमें जैन और बौद्ध भिक्षु रहा करते थे।

पश्चिमी भारत की गुफाओं की संरचना एक सी नहीं है। पूर्वी भारत में एक निश्चित योजना का पालन किया गया है। विहारों की सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- इसके केंद्र में एक चहुभुजाकार या अंडाकार कक्ष होता है।
- कक्ष के सामने खंभों वाला एक आंगन होता है।
- कई छोटी चहुभुजाकार कोठरियाँ भी मिलती हैं।
- इन कोठरियों और कक्षों में बेंच लगा होता था जिसका उपयोग भिक्षु किया करते थे।

पश्चिमी भारत के आरंभिक विहार भज, बेदसा, अजंता, पीतलकोरा, नासिक और कार्ले में प्राप्त हुए हैं। खारवेल के शासन काल में जैन भिक्षुओं के लिए उदयगिरि और खंडगिरि में विहार खुदवाये गये थे। दो हिस्सों में 35 गुफाएँ खोदी गयी थीं। किसी में एक कोठरी है और कई गुफाओं में अनेक कोठरियाँ हैं। इनमें एक खुला आँगन भी मिलता है। अंदरूनी हिस्सों के प्रवेश द्वार अर्द्ध वृत्ताकार मेहराबों से आच्छादित हैं। उदयगिरि की पहाड़ियों में निर्मित दुमंजिली रानीगुम्फा गुफा सभी गुफाओं में सबसे विशाल है।
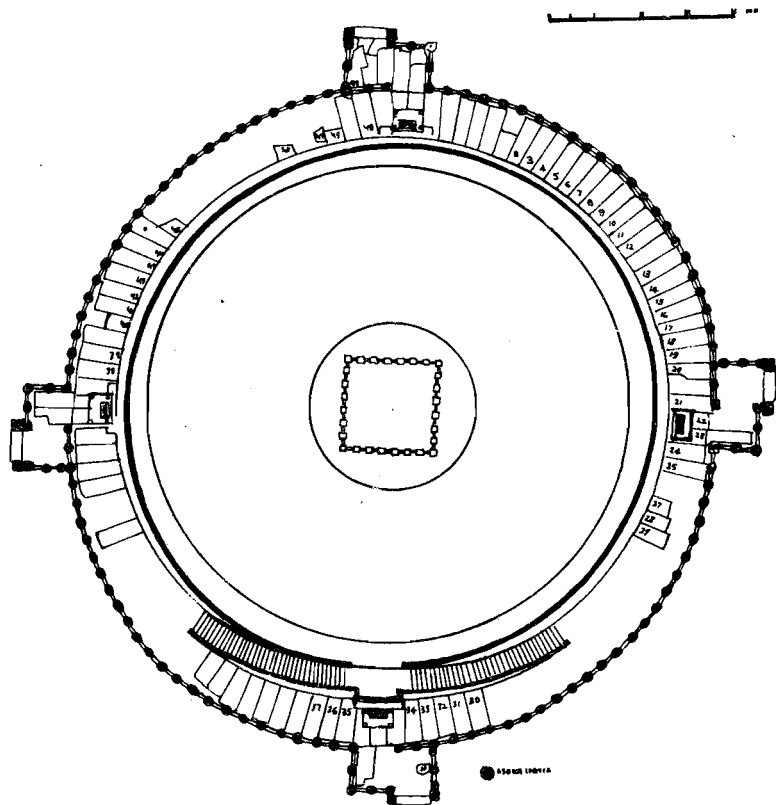
3. सांची स्तूप की बनावट
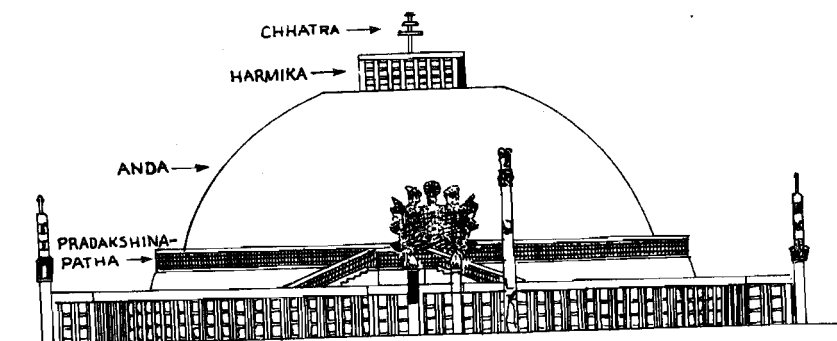
4. सांची स्तूप
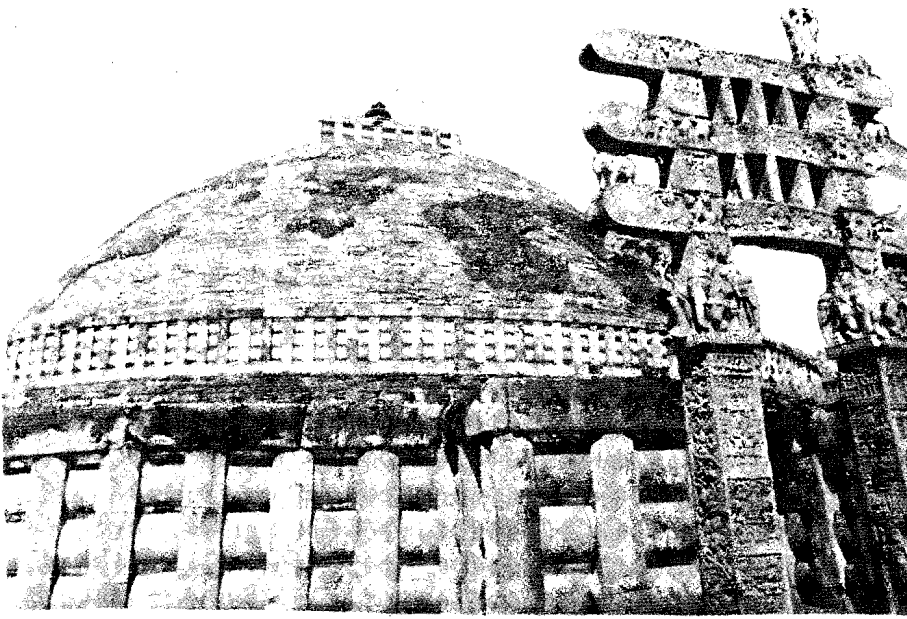
5. सांची के विशाल स्तूप का एक भाग
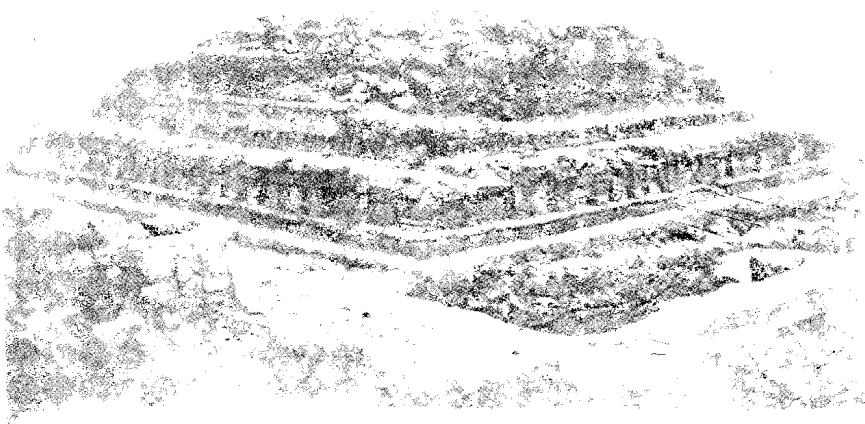
6. तक्षिला का चिरतोप स्तूप

7. दीवार पर नक्काशी की हुई स्तूप की एक आकृति
(नागार्जुनकोंडा)
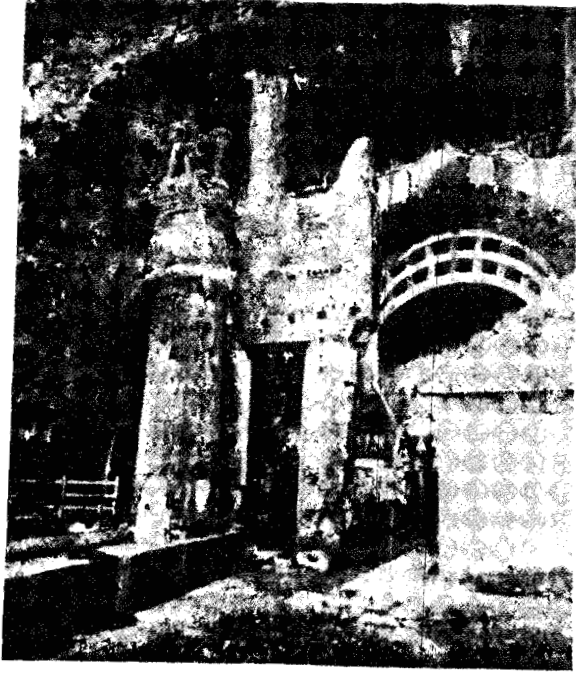
8. कार्ले चैत्य का समाने का भाग
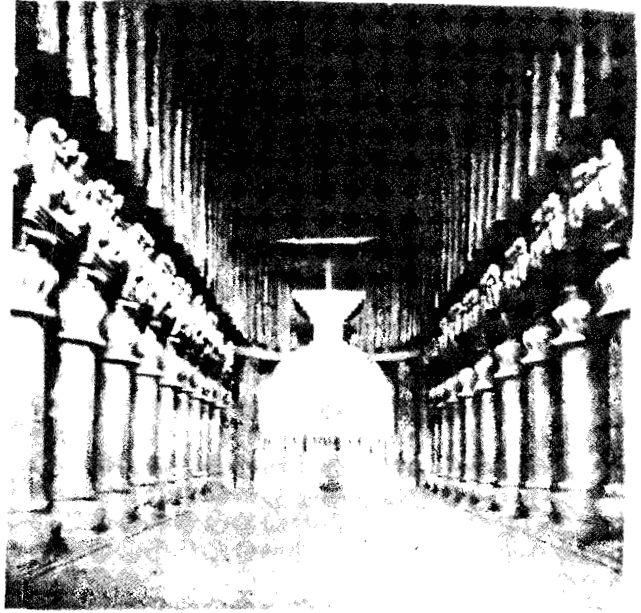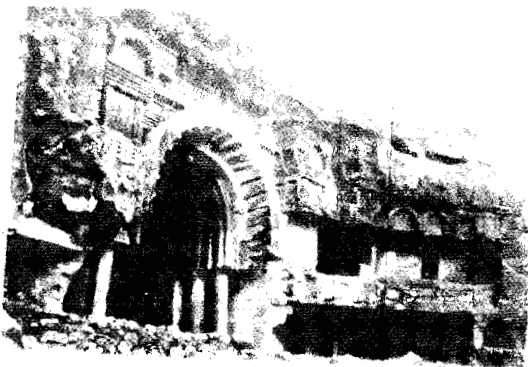
9. कार्ले चैत्य की गुफा

11. रानी गुम्फा की गुफा (उदयगिरि)

10. भज चैत्य की गुफा
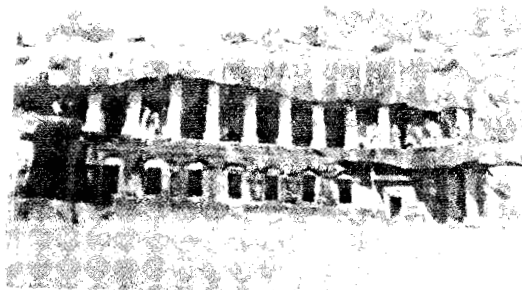
बोध प्रश्न 1

1) पाँच पंक्तियों में मौर्य कला की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

2) स्तूप से आप क्या समझते हैं? सांची स्तूप की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें। दस पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

i) बौद्ध और जैन धर्म ने अधिकांश कलारूपों को .... (प्रेरित/निरुत्साहित) किया।

ii) मौर्य कला .... (अपरिपक्व/परिपक्व) कला रूप है।

iii) नागार्जुनकोंडा स्तूप उत्तर भारत के अन्य स्तूपों से .... (अभिन्न/भिन्न) है।

iv) .... (मोर्टिमर व्हीलर/सरजान मार्शल) ने तक्षशिला में उत्खनन की शुरुआत की।

v) विहारों का उपयोग भिक्षु .... (पूजा स्थल/आवास) के रूप में करते थे।

26.4 मूर्ति कला

मूर्ति कला को स्थापत्य कला से अलग करके नहीं देखा जा सकता है, क्योंकि स्तूप और चैत्य जैसी कलात्मक संरचनाओं का निर्माण दोनों के योग से ही होता है। किसी भी मूर्ति की स्थापना विहारों या अन्य धार्मिक स्थलों पर ही होती थी। इस काल में, हमें मूर्ति कला के क्षेत्र में क्षेत्रीय या स्थानीय शैलियाँ और केंद्र देखने को मिलते हैं। उत्तर में गांधार और मथुरा केंद्र विकसित हुए, जबकि दक्षिण में निचली कृष्णा-गोदावरी घाटी में अमरावती प्रमुख आरंभिक केंद्र था।

समग्र रूप में, मौर्योत्तर काल की कला आरंभिक शाही मौर्य कला से अलग है। मौर्य कला को शाही कला कह सकते हैं, जबकि शुंग कण्व शासन कला की कला का सामाजिक आधार अधिक व्यापक है। इसके मूलभाव, तकनीक और महत्व में भी अंतर है।

इस युग की मूर्ति कला बुद्ध की मूर्ति और रेलिंगों पर उभरी हुयी खोद कर बनायी गयी नक्काशी, प्रवेश द्वार, स्तूपों के आधारों, तोरणों और विहारों और चैत्यों की दीवारों पर उभारदार नक्काशी में प्रतिबिंबित होती है। इस काल में ब्राह्मण धर्म से संबंधित मूर्तियाँ कम ही बनाई गयीं। इस कला में मथुरा और गांधार कला-केंद्रों में बुद्ध की प्रतिमा बनाने का चलन शुरू हुआ। बौद्ध और जैन धर्म की देखादेखी ब्राह्मण धर्म में भी कई देवी देवताओं की मूर्तियाँ बनाई जाने लगीं।

रेलिंगों पर चित्र उत्कीर्ण करने के अलावा गोलाकार आधार पर भी चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे। ये चित्र आकार में बड़े और सुस्पष्ट हैं। इसके बावजूद वे सही गणितीय अनुपात में नहीं बने हुए

हैं। इस श्रेणी में यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ सबसे ज्यादा उत्कीर्ण की गयीं। इनमें सर्वप्रमुख दीदारगंज (पटना) से प्राप्त यक्षिणी जी की मूर्ति है।

शुंग काल से जैन धर्म में मूर्ति पूजा शुरू हो गयी थी। लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त सिर विहीन नग्न मूर्ति का संबंध तीर्थंकर से बताया जाता है। हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार पूर्वी भारत के जैनों के बीच मौर्य काल के पहले से मूर्ति पूजा प्रचलित थी। कुछ जैन मूर्तियाँ मथुरा से अष्टमंगलों (आठ शुभ चिह्न) के साथ उपासना शिल्प पट्ट पर प्राप्त हुई है। इससे पता चलता है कि प्रथम शताब्दी ईस्वी तक जैनों के बीच मूर्ति पूजा आम बात हो गयी थी।

बौद्ध धर्म में महायान संप्रदाय ने मूर्ति पूजा की शुरुआत की। मथुरा और गांधार में बैठने और खड़े होने की मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति बनायी गयी।

सांची, भरहुत और बोध गया की दीवारों पर उभारदार, मूर्तियों का निर्माण किया गया है, ये उभारदार कला के आरंभिक उदाहरण हैं। इस प्रकार के अधिकांश शिल्प स्तूप को घेरे हुए रेलिंग के गोल या आयताकार फलक पर उत्कीर्ण पाये गये हैं। उभारदार शिल्प में या तो बुद्ध का जीवन उत्कीर्ण किया गया है या जातक कथाओं के दृश्य अंकित किए गये हैं और घटनाओं का वर्णन लगातार किया गया है।

26.4.1 गांधार कला केंद्र

गांधार भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में सिंधु नदी के दोनों ओर स्थित है। इसमें पेशावर की घाटी, स्वात, बुनेर और बज्जोरा के इलाके शामिल हैं। छठी-पांचवी ई.पू. में ईरान के अक्कामेनिदों ने यहाँ शासन किया था। बाद में यूनानियों, मौर्यों, शकों, पल्लवों और कुषाणों ने इस क्षेत्र पर अधिकार जमाया। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में एक मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ। बौद्ध धर्म से जुड़ी यह कला यूनानी कला रूप से काफी प्रभावित थी। उदाहरण के लिए बुद्ध की प्रतिमा में उत्कीर्ण वस्त्र यूनानी रोमन फैशन के अनुरूप झीने और पारदर्शी होते थे और बालों का डिजाइन प्रायः घुंघराला बनाया जाता था। पर एक बात याद रखनी चाहिए कि गांधार कला के प्रमुख संरक्षक शक और कुषाण थे।'

गांधार कला केंद्र की कला के नमूने जलालाबाद, हड्डा, बामरान, बेग्राम और तक्षशिला से प्राप्त हुए हैं। गांधार कला को दो स्कूलों में विभक्त किया जा सकता है—आरंभिक और बाद की कला। आरंभिक कला केंद्र का अस्तित्व सन् ईस्वी की प्रथम और द्वितीय शताब्दी में था, इस काल में मूर्तियों का निर्माण नीले-भूरे रंग की परतदार चट्टानों से किया जाता था। बाद के कला केंद्र में परतदार चट्टानों के स्थान पर मिट्टी, चूना, भिति स्तंभ और पलस्तर का उपयोग किया जाता था। इन मूर्तियों में मनुष्य की आकृति का जीवंत अंकन हो पाता था। उनके नाक-नक्शे तीखे हुआ करते थे और उनमें एक गणितीय अनुपात होता था।

इन मूर्तियों के अतिरिक्त दीवारों पर उभारदार मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण की जाती थीं। इनमें अधिकांशतः बुद्ध और बोधिसत्व के जीवन से संबंधित चित्र अंकित होते थे। उदाहरण के लिए :

- तक्षशिला का स्तूप बोधिसत्व की मूर्तियों से सजाया गया है, ये मूर्तियाँ पूजा के लिए ताखे पर रखी हैं।
- सेहरीभेलोल स्तूप के छोटे खंभों के परकोटे पर बुद्ध, बोधिसत्व और उनके जीवन से संबंधित घटनाएँ उत्कीर्ण हैं।
- शाह जी की ढेरी स्थित स्तूप के बगल वाली दीवार से एक कांस्य अस्थि-मंजूषा प्राप्त हुई है। इसमें बुद्ध, कुषाण राजा और उड़ता हुआ हंस (विचरणशील भिक्षुओं का प्रतीक) चित्रित हैं।

गांधार कला की कई अन्य विशेषताएँ भी हैं। उदाहरण के लिए बिमरान में एक सोने की अस्थि-मंजूषा प्राप्त हुई है, जिसमें एक छतरी के भीतर कई चित्र अंकित हैं। इसी प्रकार हाथी दांत की बनी एक पटिया ब्रेग्राम से प्राप्त हुई है।

यहाँ हम कुछ चित्र दे रहे हैं (देखें सं. 12, 13, 14, 15, 16, 17) जिनमें गांधार कला के विभिन्न पक्ष उजागर हुए हैं।

26.4.2 मथुरा कला केंद्र

मथुरा कला का जन्म दूसरी शताब्दी ई.पू. से माना जा सकता है। ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी तक न केवल यह कला के एक प्रमुख केंद्र के रूप में सामने आ गयी थी, बल्कि इसकी मांग दूर-दूर के इलाकों तक फैल गयी। चार सौ वर्षों के अपने जीवन-काल में इस कला-केंद्र ने विविध प्रकार के शिल्प प्रस्तुत किए और बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों के लिए मूर्तियाँ
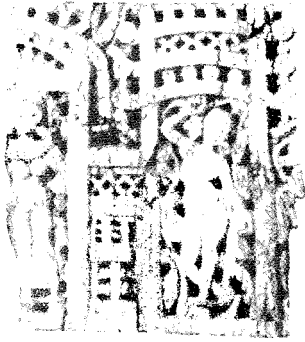
12. हाथीदांत का अलंकृत पट्ट

13. बुद्ध की खड़ी हुई मुद्रा में मूर्ति

14. ध्यान मग्न मुद्रा में बुद्ध

15. शिला पर निर्मित बोधिसत्व आकृति

16. बुद्ध का मुखमण्डल (एक विशेष पलस्तर से बना)
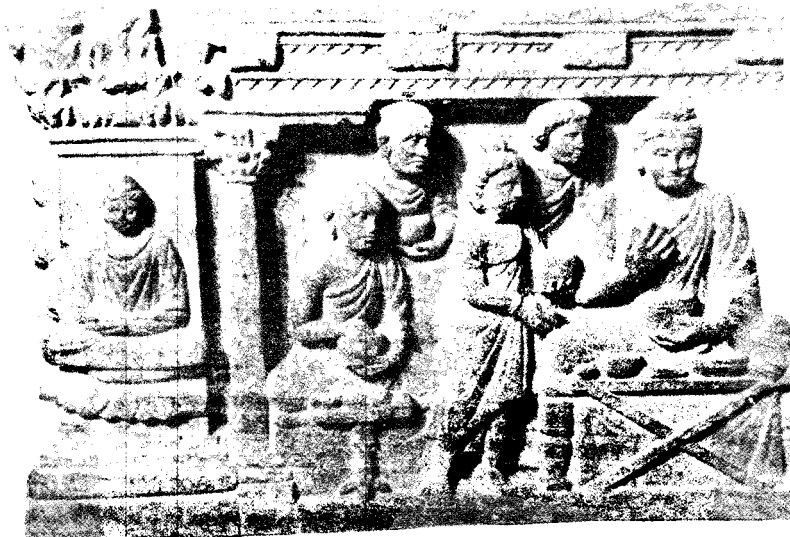
17. भिक्षुओं के साथ भोजन करते हुये महात्मा बुद्ध

बनायी। मथुरा कला की एक खास विशेषता यह है कि अफगानिस्तान की तरह इसमें भी कुषाण काल में राजा और सामंतों की मूर्तियाँ बनायी गयीं। इससे पता चलता है कि मथुरा के कलाकार इस युग की विभिन्न कलात्मक गतिविधियों से परिचित थे और भारतीय तथा अभारतीय मूल के विभिन्न सामाजिक समूहों की मांगों को पूरा करने के प्रति जागरूक थे। मथुरा कला में स्थानीय रूप से उपलब्ध लाल बलुआ पत्थर का उपयोग होता था। इस कला केंद्र की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें पवित्र खंभों पर जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रांकन किया गया है। मसलन, कहीं जंगल का दृश्य है, जहाँ पुरुष और स्त्री फूल चुन रहे हैं, महिलाएँ सारस के साथ खेल रही हैं या चिड़ियों को दाना चुगा रही हैं तथा फुलवारी और सरोवर में क्रीड़ा कर रही हैं। "कंकालितिया के पवित्र खंभों पर नारी सौंदर्य को शिल्पी ने सजीवता से उत्कीर्ण किया है"।

वस्तुतः मथुरा कला केंद्र के कलाकारों ने अपनी कला की प्रस्तुति के लिए अनेक विषय चुने। सांची और भारहुत में कलाकार ने प्राकृतिक दृश्यों का सुंदर उपयोग किया है।

इस कला केंद्र की मूर्तियाँ स्थानीय तौर पर प्राप्त लाल बलुआ पत्थर से बनायी जाती थीं। आइए, मथुरा कला केंद्र में बनायी गयी मूर्तियों के विषयवस्तु पर विचार करें।

1) **बुद्ध की प्रतिमाएँ** : बोधिसत्व और बुद्ध की मूर्ति संभवतः सबसे पहले मथुरा में बनायी गयी थी और यहीं से देश के सारे हिस्से में भेजी गयी थी। उदाहरण के लिए कनिष्क प्रथम के शासन काल में सारनाथ में स्थापित खड़े बोधिसत्व की मूर्ति का निर्माण मथुरा में ही किया गया था। हम बुद्ध की प्रतिमा मुख्यतः दो मुद्राओं में देखते हैं—खड़े और बैठे हुए। बैठने की मुद्रा वाली मूर्तियों में सबसे पुरानी प्रतिमा कात्रा में पायी गयी है। इस प्रतिमा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- बोधि वृक्ष के नीचे बैठे बुद्ध
- अभय की मुद्रा में दाहिना हाथ,
- हथेली और पैर के नीचे धर्म चक्र और त्रिरत्न के निशान उत्कीर्ण
- चुटिया के अतिरिक्त सिर पूरी तरह घुटा हुआ।

वस्तुतः इस युग की बौद्ध प्रतिमाओं की आम विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

i) उनका निर्माण उजले धब्बे वाले लाल पत्थर से किया गया है।

ii) मूर्तियों का निर्माण गोलाकार हुआ है ताकि चारों तरफ से उन्हें देखा जा सके।

iii) सिर के बाल और चेहरे की दाढ़ी बिल्कुल साफ है।

iv) दाहिना हाथ अभय की मुद्रा में है।

v) ललाट पर कोई निशान नहीं है।

vi) वस्त्र शरीर से बिल्कुल सटे होते हैं और इसका झालर बाएँ हाथ में रहता है।

2) **जैन प्रतिमाएँ** : मथुरा ब्राह्मण और बौद्ध धर्म का पवित्र स्थल होने के साथ-साथ जैन धर्म की भी पुण्य भूमि है। यहाँ बहुत से ऐसे अभिलेख प्राप्त हुए हैं, जिनमें जैन धर्म के अनुयायियों, जैन भिक्षुओं, भिक्षुणियों, उनको दिए गए दान-पुण्य का उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, द्वितीय शताब्दी की अर्द्ध शती के आस-पास के अभिलेख (प्रासाद-तोरण) में जैन श्रावक को "उत्तर दसक" कहा गया है। ककाली टीला मथुरा का प्रमुख स्थल है जहाँ से कई जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस स्थान से निम्नलिखित शिल्पगत नमूने प्राप्त हुए हैं :

- मूर्तियाँ
- जैन मूर्तियों से अंकित पत्थर की पट्टियां या आयक पट्ट, इन पट्टियों पर जैन धर्म की अन्य निशानियाँ, जैसे स्तूप आदि भी अंकित हैं।
- इमारतों के टूटे हुए अंश, जैसे खंभे, स्तंभ शीर्ष, अर्गला ढेंकली रेलिंग आदि।

आयक पट्ट पर जैन और तीर्थाकारों के चित्र कुषाण काल के पहले अंकित किए गए थे, पर कुषाण काल से ही मूर्तियाँ नियमित रूप से बनने लगीं। इनमें से पार्श्वनाथ को सांपों के साथ और ऋषभनाथ को कंधे पर झूलते बालों के साथ पहचाना जा सकता है, पर अन्य तीर्थाकारों की प्रतिमाओं को आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है।

3) **ब्राह्मण धर्म की मूर्तिया** : ब्राह्मण धर्म से संबंधित कुछ मूर्तियाँ भी मथुरा से प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार की आरंभिक मूर्तियों में शिव, लक्ष्मी, सूर्य और बलराम उल्लेखनीय हैं। कुषाण काल में कार्तिकेय, विष्णु, सरस्वती, कुबेर नाथ और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ बनायी जाती थीं। इस काल की मूर्ति विद्या की यह विशेषता है कि प्रत्येक देवता अलग से पहचाने जा सकते हैं और

उदाहरण के लिए हालांकि शिव लिंग-रूप में पूजे जाते हैं, पर इस काल में चहुर्मुख लिंग का निर्माण होने लगा। इसमें एक लिंग के चारों ओर शिव की मुखाकृति लगी होती है।

- कुषाण काल में सूर्य देवता दो घोड़े से जुते एक रथ पर सवार दिखाये गये हैं। उन्होंने भारी कोट पहन रखा है, इसके अतिरिक्त उनके बदन पर सलवार और जूता भी है। उनके एक हाथ में तलवार और दूसरे में कमल है।
- बलराम के सिर पर भारी पगड़ी है।
- सरस्वती एक हाथ में रूद्राक्ष की माला और दूसरे हाथ में पुस्तक लिए बैठी है। उन्होंने साधारण वस्त्र पहन रखे हैं और उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं है, उनकी सेवा में दो प्रतिमाएं लगी हुई हैं।
- दुर्गा महिष-मर्दिनी रूप में है, उन्हें भैंस रूपी राक्षस को मारते हुए दिखाया गया है।

मथुरा से यक्ष और यक्षिणी की अनेक मूर्तियाँ मिली हैं। उनका संबंध बौद्ध, जैन और ब्राह्मण तीनों धर्मों से है। कुबेर अन्य देवता है, जिसकी मूर्ति एक मोटे व्यक्ति के रूप में बनायी गयी है। उसका संबंध मद्य और मद्यपान के आयोजन से बताया गया है। इस देवता पर वधू और डायोनीसस जैसे रोमन और यूनानी मद्य देवता की छाप दिखायी देती है।

3) **शासकों की प्रतिमा :** मथुरा के मट गांव से प्रमुख कुषाण राजाओं जैसे कनिष्क, बीम और चास्तन की विशाल प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। शासकों और राज्य की प्रमुख हस्तियों की प्रतिमाओं को बनाने और उनके रखरखाव का विचार संभवतः मध्य एशिया से आया होगा। यह शासक को देवत्व का दर्जा देने के लिए किया जाता था। इन प्रतिमाओं के वस्त्रों पर मध्य एशिया का प्रभाव स्पष्ट है।

मट से सिथियन अधिकारियों/शासकों की मूर्तियों का शीर्ष भाग प्राप्त हुआ है। इन खोजों से पता चलता है कि मथुरा कुषाण साम्राज्य के पूर्वी भाग का एक प्रमुख केंद्र था। इससे यह भी पता चलता है कि गांधार और मथुरा कला रूपों में काफी आदान-प्रदान हुआ था।

कालांतर में गुप्त कला-रूपों के विकास में मथुरा कला रूप ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

26.4.3 अमरावती कला केन्द्र

इस अवधि के दौरान, पूर्वी दक्खन में, कृषाण और गोदावरी की निचली घाटियों में अमरावती कला केंद्र का विकास हुआ। इस कला केंद्र को सतवाहन राजाओं, इक्षवाकु शासकों, राजनेताओं और उनके परिवारों, अधिकारियों, व्यापारियों आदि का संरक्षण प्राप्त था। यह कला बौद्ध धर्म से प्रभावित थी और इसके मुख्य केंद्र नागार्जुनकोंडा, अमरावती, गोली, घंटसाल, जग्गेयापेटा थे। यह कला 150 ई.पू. से सन् 350 ईस्वी तक अपनी समृद्धि और उत्कर्ष पर थी। इस कला केंद्र के शिल्पगत नमूने भी रेलिंग, चबूतरे और स्तूप के अन्य हिस्सों के रूप में उपलब्ध हैं। इस कला केंद्र में भी बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं को जगह-जगह उभारदार शैली में उत्कीर्ण किया गया है। उदाहरण के लिए अमरावती में बुद्ध द्वारा एक मतवाले हाथी को वश में किए जाने की कथा उत्कीर्ण है। शिल्पकार ने पूरी कथा को स्वाभाविक ढंग से चित्रांकित किया है :

- एक मतवाला हाथी मार्ग में खड़े बुद्ध की ओर बढ़ रहा है,
- पुरुष और महिलाएँ भयभीत हैं, पुरुषों ने अपने हाथ उठा रखे हैं और महिलाएँ उनसे चिपकी हुई हैं,
- बुद्ध हाथी की ओर आराधना और विनम्रता की मुद्रा में बढ़ रहे हैं,
- हाथी आत्मसमर्पण की मुद्रा में नतमस्तक हो जाता है।
- यह संपूर्ण घटना पुरुष और महिलाएँ झरोखे और खिड़कियों से देख रहे हैं।

शिल्पकार ने यह सारी कहानी गोलाकार रूप में उभारदार शैली में उत्कीर्ण की है :

- मूर्तियाँ उजले संगमरमर से बनायी गयी हैं,
- उनकी टांगे लंबी हैं और ढाँचा छरहरा है,
- इस कला में शारीरिक सौंदर्य और सांसारिक अभिव्यक्ति छाई हुई है,
- हालांकि प्राकृतिक दृश्य भी उत्कीर्ण किए गए हैं, पर केंद्र में मनुष्य ही है, और
- राजाओं, राजकुमारों और राजप्रासादों को भी चित्रित किया गया है।

पांच सौ वर्षों की लंबी अवधि में अमरावती की कला लगातार परिपक्वता प्राप्त करती गयी। उदाहरण के लिए इस कला का आ भिक उदाहरण जग्गेयापेट से मिला है, जिसका समय 150 ई.पू. माना जाता है। इनमें मूर्तियों ो अलग-अलग इकाइयाँ हैं और एक समूह के रूप में उनका

. अपने केश संवारती एक स्त्री

19. तीर्थंकर का मुख भाग

20. एक जातक कथा पर आधारित दीवार पर नक्काशी से बनी आकृतियाँ

21. सूर्य

22. कुबेर अपने अनुयायियों के साथ
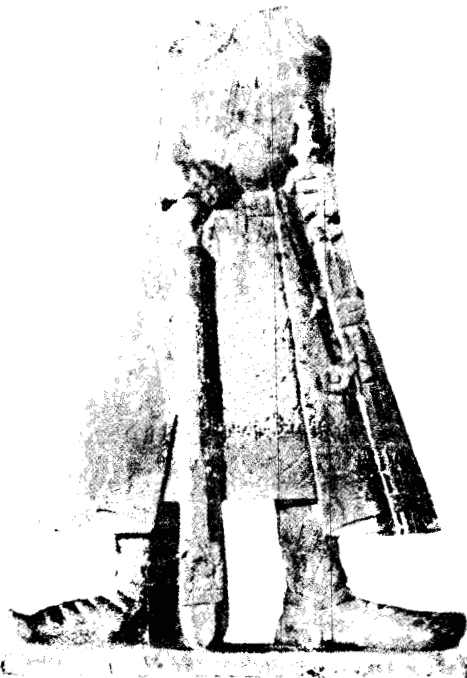
23. कनिष्क की मूर्ति

24. चतुर्मुखी शिवलिंग

कृष्णा घाटी की वर्णनात्मक उभारदार उत्कीर्ण कला की अनिवार्य विशेषता थी, बाद में इसे पल्लव मूर्ति कला ने अपना लिया। इन चित्रों में मूर्तियाँ ढंग से बनी हुई और एक दूसरे से संबद्ध हैं।

विषयवस्तु या कथ्य की दृष्टि से मथुरा और अमरावती की कला में कहीं-कहीं आश्चर्यजनक समानता है। उदाहरण के लिए अमरावती में छह स्त्रियों को एक साथ पात्र से स्नान करते हुए दिखाया गया है, इससे बिल्कुल मिलता जुलता एक नमूना मथुरा में भी पाया गया है। मथुरा में भी कुषाण राजाओं की मूर्तियाँ बनायी गयीं और अमरावती मूर्तिकला ने भी राजाओं और राजकुमारों को अपनी कला का कथ्य बनाया। इसके बावजूद अमरावती में इनका अंकन व्यक्तिगत तौर पर नहीं, बल्कि कथा कहने के क्रम में हुआ है। उदाहरण के लिए—

- राजा उदयन और उसकी रानी की कहानी
- नजराना कबूल करते हुए राजा और राजदरबार का दृश्य
- हाथी, घुड़सवार और पैदल सेना के साथ राजा की शोभायात्रा

वस्तुतः सतवाहनों के संरक्षण और मंजे हुए शिल्पकारों के कारण अमरावती कला केंद्र ने प्राचीन भारत के कुछ सर्वोत्तम कला रूप प्रस्तुत किया।

बोध प्रश्न 2

1) दस पंक्तियों में गांधार कला का विवेचन करें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करें, जिससे पता चले कि धार्मिक विषयवस्तु के अलावा राजनीतिक हस्तियों ने भी शिल्पियों का ध्यान आकृष्ट किया। दस पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

i) उभारदार मूर्ति कला में .... (महाभारत/जातक कथाओं/रामायण) को विषयवस्तु बनाया गया।

ii) गांधार कला के मुख्य संरक्षक .... (मौर्य/सातवाहन/शक और कुषाण) थे।

iii) .... (अमरावती/तक्षशिला/मथुरा) की मूर्तिकला में प्राकृतिक दृश्यों का सर्वोत्तम अंकन हुआ है।

iv) ब्राह्मण धर्म से संबद्ध मूर्तियाँ .... (सारनाथ/मथुरा/नागार्जुनकोंडा) में प्राप्त हुई हैं।
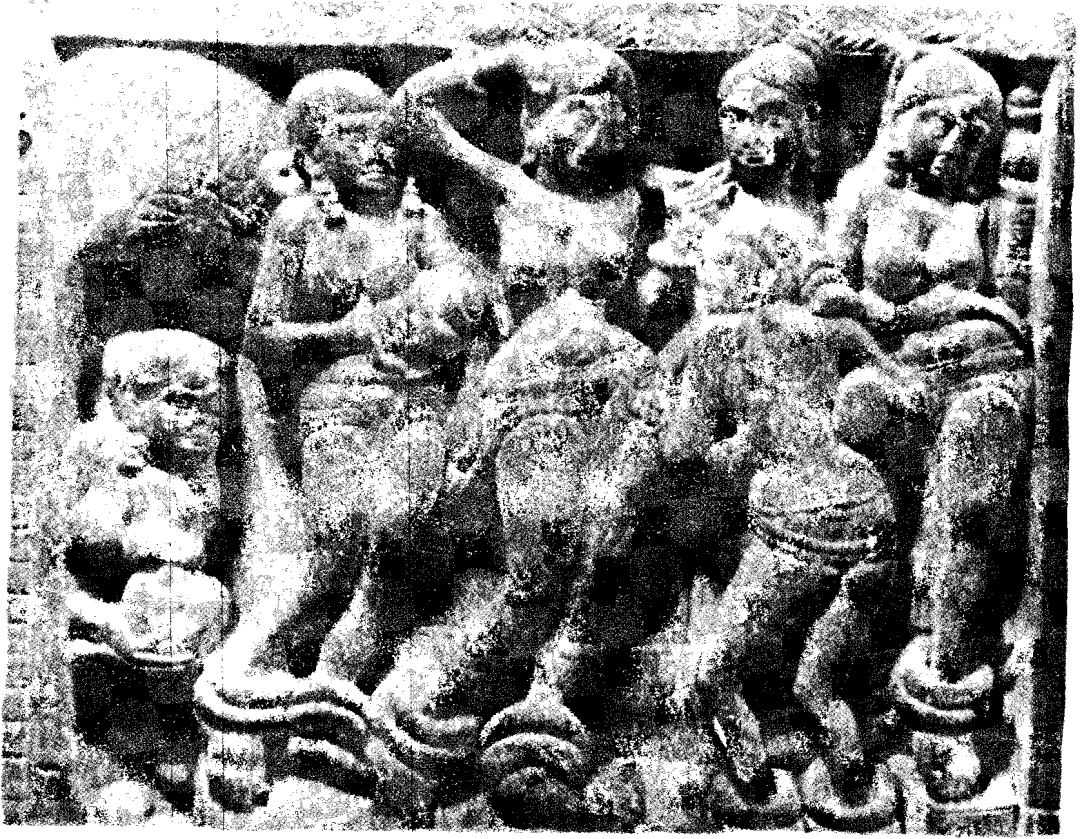
25. स्नान करते हुए कुछ महिलायें

26. राजा उदयन तथा उसकी रानियों की नक्काशी की हुई आकृतियाँ

27. एक हाथी को वशीभूत करते हुये महात्मा बुद्ध

4) सही और गलत वक्तव्यों के सामने क्रमशः (√)और (×)का निशान लगाएँ।
   i) मथुरा से तीर्थंकर की एक संपूर्ण मूर्ति प्राप्त हुई है।
   ii) कुबेर की मूर्ति सूर्य उपासना का प्रतिनिधित्व करती है
   iii) गांधार मूर्ति कला में यूनानी कथ्य को भारतीय शैली में प्रस्तुत किया गया है।
   iv) अमरावती कला केंद्र पूर्वी भारत में फला-फूला।

26.5 सारांश

हमने देखा कि इस काल में स्थापत्य और मूर्तिकला अपने उत्कर्ष पर पहुँच गयी और शिल्पियों ने कला के उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत किए। दुर्भाग्य से, हमें इन शिल्पियों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। हमारे पास उनकी कला है, पर उनके नाम नहीं है। कहीं-कहीं संरक्षकों के नाम भी उपलब्ध नहीं है। इससे पता चलता हे कि शिल्पी अब राजकीय सहायता पर ही आश्रित नहीं रहे, क्योंकि कई व्यापारियों, श्रद्धालुओं और अन्य लोगों ने उन्हें संरक्षण प्रदान किया।

कला रूप और कथ्य प्रस्तुति में निरंतर विकास होता रहा। मसलन, आरंभिक शिल्प चित्रकला, मिट्टी की मूर्ति जैसी संरचनात्मक अभिव्यक्तियों का विकास परिपक्व मूर्ति कला के रूप में हुआ। इस काल में सपाट और गोलाकार दोनों प्रकार की शिला मूर्तिकला का विकास हुआ। प्रतीकात्मक वस्तुओं की जगह मूर्तियों ने ले ली. इस प्रकार के परिवर्तन का सबसे अच्छा उदाहरण बुद्ध की मूर्तियाँ हैं।

इस इकाई में हमने यह भी देखा कि प्रदेश विशेष में अलग कला-रूपों का विकास हुआ। गांधार, मथुरा और अमरावती में अलग-अलग कला रूपों का विकास हुआ। हालांकि इन कला रूपों में धार्मिक विषयों को प्रमुखता प्राप्त हुई है, पर मनुष्य और प्रकृति का भी चित्रण किया गया है। इस प्रकार के चित्रों में उस काल की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी की हल्की झांकी मिल सकती है। मथुरा में उत्कीर्ण भिक्षुओं, संरक्षकों और सेवकों की मूर्तियाँ इसका अच्छा उदाहरण है। भारतीय

कलाकारों ने यूनानी और मध्य एशियाई कला रूपों को भी ग्रहण किया और इस प्रकार आदान-प्रदान के माध्यम से भारतीय कला अपने उत्कर्ष पर पहुँच गयी।

26.6 शब्दावली

परतदार चट्टान : एक प्रकार की चट्टान जिसमें अनेक परतें होती हैं।

बहुकोण शिखर : अर्द्ध गोलाकार संरचना।

मेहराब : दरवाजे के ऊपर की धनुषाकार बनावट।

26.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग, 26.1
2) देखें उपभाग, 26.3.3
3) i) प्रेरित
   ii) परिपक्व
   iii) भिन्न
   iv) सर जान मार्शल
   v) आवास

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 26.4.1 के आधार पर अपना उत्तर लिखें।
2) मथुरा में हुई खुदाई के दौरान प्राप्त राजा की मूर्तियों और अमरावती की मूर्ति कला का उल्लेख करें।
   देखें उपभाग 26.4.2 और 26.4.3
3) i) जातक कथाएँ
   ii) शक और कुषाण
   iii) मथुरा
   iv) मथुरा
4) i) (√) ii) (×) iii) (×) iv) (×)

इस खंड के लिए उपयोगी पुस्तकें

शिव शंकर मिश्र *प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास*

ए.एल. बाशम *अद्भुत भारत*

डी.डी. कोशांबी *प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता*

रोमिला थापर *भारत का इतिहास—खण्ड एक*

डी.एन. झा *प्राचीन भारतीय इतिहास की रूपरेखा*